प्रातःक्लास 16.3.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?''

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे जानते हैं अभी हमको वापस जाना है। आगे बिल्कुल नहीं जानते थे। बाप आत्माओं को समझाते हैं। इनका समझाना भी ड्रामा प्लैन अनुसार अभी राइट देखने में आता है। और कोई समझा न सके। अभी हमको वापस जाना है। अपवित्र तो वापस जा नहीं सकते। यह ज्ञान भी इस समय ही मिल सकता है। एक बाप ही आकर देते हैं। पहले तो यह याद करना है हमको वापस जाना है। बाबा को बुलाते रहते थे, मालूम कुछ भी नहीं था। अचानक जब समय आया तो बाबा भी आ गया और नई–2 बातें समझाते रहते हैं। बच्चे जानते हैं हमको अभी वापस जाना है। बाप कहते हैं तुम पतित तो हो ही। अभी पावन होना है। नहीं तो सज़ा भी खानी पड़ेंगी। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। इतना एक हो जाता है। जैसे यहां राव और रंक वैसे वहां भी राव और रंक बनते हैं। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। अभी बाप कहते हैं वापस जाना है। आत्मा को पावन ज़रूर बनना है। तुम खुद जानते हो पतित हैं तब तो पुकारते हैं। यह भी तुमको अभी समझाते हैं। अज्ञान काल में यह बुद्धि में नहीं रहता । बाप कहते हैं आत्मा जो तमोप्रधान बनी है उनको सतोप्रधान बनाना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनती है वह भी सीढ़ी में समझाया है। उनके साथ फिर दैवीगुण भी धारण करनी है। यह है बेहद का स्कूल। स्कूल में रजिस्टर रखते हैं ना। गुड कॉन्डेक्ट, बेटर कॉन्डेक्ट, बेस्ट कॉन्डेक्ट। फर्क तो है ना। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं वह बहुत मीठे हैं। अच्छे–2 कॉडेक्ट को पाते रहते हैं। कम कॉन्डेक्ट तो इतना उछल नहीं खाते हैं। सारा मदार है पढ़ाई और योग पर और दैवीगुण पर भी है। बच्चे समझाते हैं बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। पढ़ाते तो इनको भी हैं ना ; परन्तु यह हिर जाते हैं तो झट बेहद में आ जाते हैं। बाबा ही बोलने शुरू कर देते हैं। हैं तो दोनों इक्ट्ठे। बीच में कब वह, कब यह बात करते हैं। समझ जाते हैं यह तो बाबा की समझानी है। इनको भी प्रैक्टिस हो जाती है। यह तो बच्चे जानते हैं। आगे हम शूद्र वर्ण के थे। अभी ब्राह्मण वर्ण के हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हो गये। हम ब्राह्मण हैं यह भी ब्राह्मणों को भूल जाता है। यह तो याद रहना चाहिए ना। जबकि बाप को याद करते हो तो ब्रह्मा को भी याद करना पड़े। हम ब्राह्मण कुल के हैं तो नशा भी चढ़े भी ना। भूल जाते हैं तो यह नशा भी नहीं चढ़ता। हम ब्राह्मण कुल के हैं फिर हम देवता कुल के बनेंगे। ब्राह्मण कुल किसने बनाया? ब्रह्मा द्वारा मैं तुमको ब्राह्मण कुल में ले आता हूँ। ब्राह्मणों का यह डिनायस्टी नहीं है , छोटा सा कुल है। अपने को ब्राह्मण समझेंगे तो देवता भी बनेंगे। अच्छा, अपने धंधे आदि में लगने से बातें भूल जाते हैं, ब्राह्मणपना भी भूल जाता है। अच्छा , उनसे फारग़ हुये तो फिर पुरुषार्थ करना चाहिए। कोई–2 धंधा ऐसा होता है जिसमें जास्ती ध्यान देना पड़ता है। काम पूरा फिर अपने तात। जैसे बाबा अपना मिसाल बताते हैं। हम नारायण का भक्त था। बड़ा ही प्यार था उन पर। याद तो करना ही था ज़रूर। बहुत ही लव था। इस समय तो शिवबाबा से लव हुआ है ना। ना. के साथ बहुत लव था। फोटो पॉकेट में भी पड़ा रहता था। बिस्तरे में भी रखा था। मुरादी के खाने में भी रखा था। पहले मूर्ति देख , पीछे काम शुरू करेंगे। हेर पड़ गई। तो इसमें भी बाप समझाते हैं कोई–2 ऐसा काम होता है जिसमें तुम बिज़ी रहते हो। अच्छा फ्री हुये फिर याद में बैठ जाओ। अभी भक्ति की तो बात ही नहीं। तुम्हारे पास बैज तो बहुत अच्छा है। इनको देखो। ल.ना. का चित्र भी है, त्रिमूर्ति भी है। बाबा हमको यह बनाते हैं। बस यही मनमनाभव है । कोई टेव पड़ जाती है। कोई को नहीं पड़ती है। भक्तिमार्ग तो पूरा हुआ। अभी बाप को याद करना है। बाप को जाना भी है। बाबा हमको बेहद का वर्सा देते हैं। खुशी होती है ना। किसको बहुत अच्छी लगन लग जाती है, किसको कम। बहुत इज़ी हैं मनमनाभव। गीता में भी आदि में और अंत में यह मनमनाभव अक्षर है। यह वही गीता का एपीसोड है। सिर्फ गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है। भक्तिमार्ग में जो भी दृष्टांत आदि देते हैं वह सभी है इस समय की। भक्तिमार्ग मे कोई ऐसे थोड़े ही कहते मनमनाभव्। शरीर का भान छोड़ अपन को आत्मा समझो। वह तो जानते ही नहीं। यहां तुम बच्चों को शिक्षा

मिलती है। यह शिक्षा अभी ही बाप देते हैं। यह निश्चय है देवी–देवता धर्म की स्थापना हमारे द्वारा हो रही है। राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें कोई लड़ाई–झगड़े की बात नहीं। पवित्रता सिखलाते हैं जो फिर आधा कल्प कायम रहेगी। वहां तो रावण–राज्य ही नहीं। विकार की बात ही नहीं। विकारों पर तुम जीत पहनते हो। यह भी जानते हो हूबहू कल्प पहले जैसे राजधानी स्थापन हुई थी अभी कर रहे हैं। हमारे लिए यह सारी दुनियाँ खतम होनी है। ड्रामा का चक्र फिरता–रहता है। वह है ही नई दुनियाँ। वहां तो सोना ही सोना होगा। जो बना था वह फिर बनेगा। इसमें मूंझने की बात ही नहीं। ड्रामा है ना। माया मच्छन्दर का खेल भी दिखाते हैं ध्यान में सोने की ईंटें देखीं। तुम भी बैकुण्ठ में सोने के महल देख आते हो ना। वहां ही(की) चीज़ें यहां तो ले आ नहीं सकते। यह है सा.। भक्तिमार्ग में तो इन बातों को कुछ भी समझते नहीं। तो अभी बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चे, मैं आया हूँ तुमको ले जाने लिए। तुम्हारे बिगर हमको भी जैसे बेआरामी होती है। जब वह समय होता है तो हमको बेआरामी हो जाती है। बस अभी हम जाऊँ। बहुत पुकारते हैं। तरस पड़ता है। बच्चे बहुत दुःखी हुये हैं। अभी जाऊँ। ड्रामा का जब समय होता है तब ही ख़याल होता है बस जाऊँ। वह लोग तो नाटक दिखाते हैं विष्णु–अवतरण। अभी विष्णु का अवतरण तो होता ही नहीं। नाटक में दिखाते हैं गरुड़ पर सवार होकर गया। ल.ना. गरुड़ पर थोड़े ही बैठते हैं। पक्षियों पर सवारी होती है क्या? दिन–प्रतिदिन मनुष्यों की बुद्धि एकदम खतम होती जाती है। कुछ भी समझते नहीं। आत्मा पतित बनी है ना। तो अभी कहते हैं बाबा पावन बनाओ तो रामराज्य हो। राम को कोई जानते ही नहीं। शिव की पूजा जो करने जाते हैं उनको राम नहीं कहेंगे। शिवबाबा कहना बहुत शोभता है। भक्तिमार्ग में कोई रस नहीं आता। तुमको अभी रस आता है। बाप खुद कहते हैं मीठे–2 बच्चों मैं तुमको घर ले जाने आया हूँ। फिर वहां से तुम आपे ही चले जावेंगे सुखधाम। वहां तुम्हारा साथी नहीं बनूँगा। अपनी अवस्था अनुसार तुम्हारी आत्मा चली जावेगी। जाकर दूसरे शरीर में प्रवेश करेगी अर्थात् गर्भ में जन्म लेगी। वहां गर्भजेल नहीं होता। दिखाते हैं ना सागर में पिपर(पीपल) के पत्ते..... सागर की बात नहीं। है गर्भ। वहाँ बड़े ही आराम से रहते हैं। बच्चा जब बड़ा होता है, खाने–पीने लायक होता है तो फिर माँ जो खाना खाती है उसका जो तंत बनता है वह नाभी से बच्चा को मिलता है, फिर बाद में जब बच्चा बाहर निकलता है तो नाभी को काट देते हैं। फिर जो चीज़ अन्दर मिलती थी वह बाहर से मिलने लगती है। यह सभी रचना हुई है। बाप तो कहते हैं मैं गर्भ में जाता ही नहीं हूँ। मैं तो इनमें आकर प्रवेश करता हूँ। मेरे बदली कृष्ण को बच्चा समझ दिल को बहलाते हैं। समझते हैं कृष्ण ने ज्ञान दिया; इसलिए उनको प्यार भी करते हैं। मैं तो तुमको साथ ले जाये फिर भेज देता हूँ। मेरा पार्ट पूरा। आधा कल्प कोई पार्ट ही नहीं। फिर भक्तिमार्ग बाद पार्ट शुरू होता है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। अभी तुम बच्चों को तो समझना और समझाना बहुत सहज है। दूसरों को सुनावेंगे तो भी खुशी भी होगी और फिर पद भी पावेंगे। यहां बैठ सुनते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। बाहर जाने से फिर भूल जाते हैं। जैसे जेल बर्डस होते हैं ना। बड़ी–2 कोई न कोई हरकत करके जेल में चले जावेंगे। फिर उनकी सज़ा भी बढ़ती जाती है। तुम्हारा भी ऐसा हाल होता है; इसलिए कहा जाता है गर्भ जेल में भी इनजाम कर आते हैं ,फिर वहां की वहां ही रही। यह भी सभी बातें बनाई हुई हैं। तो मनुष्य कोई पाप न करे। यह भी समझाया है आत्मा संस्कार ले जाती है। शास्त्रों के संस्कार ले जाते हैं तो पण्डित बन जाते हैं। मनुष्य समझते हैं निर्लेप तो हो न सके। अच्छे वा बुरे संस्कार ले जाते हैं तब ही कर्मों का भोग होता है। अभी तुम प्योर संस्कार ले जाते हो। पूरा पढ़ वह फिर स्टेट्स पाते हैं। बाबा तो सारे झुण्ड को ले जाते हैं। जैसे मकरों का झुण्ड होता है ना। सारे ट्रेन को ही खड़ा कर देते हैं। आत्मा भी बहुत छोटी है। तो हम आत्माओं के झुण्डों को ले जाता हूँ। थोड़े रहते हैं। बाकी बाद में आते–जाते हैं। रहते भी वह हैं जिनको पिछाड़ी में आना है। माला है ना।

नम्बरवार बनते आवेंगे। बाकी बचत पिछाड़ी जावेंगे। फिर आवेंगे भी पिछाड़ी में। कितना अच्छी रीत समझाते हैं। कोई को तो धारणा होती है। कोई की बुद्धि में बैठता ही नहीं। अवस्था ऐसी तो फिर पद भी ऐसा हो जाता। तुम बच्चों को कल्याणकारी, रहमदिल बनना है। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। दोष किसको नहीं दे सकते। कल्प पहले जितनी पढ़ाई की होगी उतनी ही होगी। जास्ती होगा ही नहीं, कितना भी पुरुषार्थ करावेंगे। कोई फर्क नहीं पड़ेगा। फर्क जब पड़े, जब किसको सुनावेंगे। नम्बरवार तो हैं ही। कहां राव रंक। यह अविनाशी ज्ञान रत्न राव बनाती है। अगर धारणा नहीं है तो रंक बन जाते हैं। यह बेहद का स्कूल है। फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड है। भक्ति में पढ़ाई की बात नहीं। वह तो है ही उतरने की बात। शोभनिक बहुत है। झांझ बजाते, स्तुति करते, अभी वह कुछ भी बात नहीं। यहाँ तो शान्ति में रहना है। भजन आदि कुछ नहीं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। तुम आधा कल्प भक्ति करते आये हो। भक्ति का कितना शो है। सभी का अपना पार्ट है। कोई गिरता है, कोई चढ़ता है। कोई की धारणा अच्छी होगी , कोई की कम। तदबीर तो बाप एकरस कराते हैं। बाप पढ़ाते तो एकरस हैं ना। बाप है एक। बाकी तुम हो मॉनिटर। कोई बड़े आदमी होते हैं, नहीं आते हैं, बोलो हम (घ)र में जाकर पढ़ावें। उन्हों को तो अपना अहंकार रहता है। एक को हाथ करने से औरों पर असर होगा; परन्तु वह भी अगर किसको कहेंगे तो सभी कहेंगे अरे, तुम कहां जाकर फंसे हो? ब्रह्माकुमारियों का संग लगा है ; इसलिए सिर्फ अच्छा–2 कहते हैं। अभी देखो, खुद मिनिस्टर तुम्हारे पास आता है। उनको तुम बता सकते हो हमको फलानी चीज़ नहीं मिलती है। हम इतना खर्चा करते हैं। कोई से भीख नहीं लेते। हमारे पास लाखों रुपया (थो)ड़े ही रखे हैं। जो 4रुपये किलो हम लेंगे। गुर खाना पड़ता है। हम भारत को हेवन बनाते हैं। हमको मदद चाहिए। आप मिनिस्टर हो। परमीट दे दो। बोलेंगे हमारे हाथ में नहीं है। दिल को खावेंगे। सभी समझेंगे उनको जादू लगा है। चार्ज वाले भी कोई कैसे, कोई कैसे होते हैं। उस समय तीर लगा तो काम निकालना चाहिए। ऐसे भी न समझे कि हमसे काम लेते हैं। युक्ति से सभी काम करना होता है। कहां–2 जो काम बड़ा ऑफिसर न करे छोटा भी कर लेते हैं। बच्चों में योग की पावर बहुत अच्छी चाहिए। ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिए। खु(श)मिजाज़ और योगी होगा तो काम निकालेंगे। नम्बरवार तो हैं ना। सारी राजधानी बननी है। बाप समझाते हैं मीठे–2 बच्चों, धारणा तो बिल्कुल ही सहज है। बाबा को जितना याद करेंगे उतना लव रहेगा। कशिश होगी ना। सूई साफ है तो चकमच तरफ खैंचेगी। कट लगी हुई होगी तो खैंचेगी नहीं। यह भी ऐसे ही है। तुम साफ हो जाते हो तो पहले नम्बर में चले जाते हो। बाप की याद से कट निकल जावेगी। बापदादा द्वारा समझाते हैं। गायन भी है बलिहारी गुरु आप नो जिन गोविन्द दियो बताये ; इसलिए कहते हैं गुरू ब्रह्मा.....वह सगाई कराने वाले गुरू मनुष्य हो जाते हैं। यह तो बाप से सगाई करानी है। गोविन्द अपने साथ यहां आकर सगाई कराते हैं। तब बाबा कहते हैं मामेकं याद करो। ब्रह्मा को याद नहीं करना है। तुम्हारी हमारे साथ सगाई है। ब्रह्मा के साथ सगाई नहीं है। शिवबाबा से सगाई करेंगे तो याद भी उनको करेंगे ना। दलाल की चित्र की दरकार ही नहीं। सगाई पक्की हो गई फिर एक को ही याद करना है। और फिर इन द्वारा कराते हैं। तो उनको भी दलााली मिलती है। सगाई का भी मिलता है। दूसरा फिर इनमें प्रवेश करते हैं, लोन लेते हैं तो वह भी कशिश करते हैं। तब बच्चों को भी ऐसे ही समझाते हैं। जितना तुम बहुतों का कल्याण करेंगे उतना तुमको उजुरा मिलेगा। यह है ज्ञान की बातें। बहुतों का कल्याण करो तो बहुतों की आर्शीवाद मिल जाती है। पैसे की दरकार ही नहीं। मम्मा थी कुछ भी धन नहीं था। कितना बहुतों का कल्याण किया। ड्रामा में पार्ट था। कोई धनवान देते हैं, म्यूज़ियम आदि निकालते हैं तो बहुतों की आर्शीवाद मिलती है। अच्छा साहुकार पद मिल जाता है। वह भी कम थोड़े ही है। बाबा को सभी का अनुभव है। साहुकारों पास भी दास–दासियाँ बहुत होते हैं। राजओं पास इतना धन नहीं होगा जितना प्रजा में साहुकारों पास धन होता है। फिर डनहीं(उन्हों) से लोन भी लेते हैं। साहुकार

प्रजा बने वह भी अच्छा है। साहुकार भी बनना चाहिए ना। वह भी अक्सर करके गरीब ही साहुकार बनते हैं। साहुकारों में हिम्मत कहां है? इसने तो फट से सभी कुछ दे दिया। पाकिस्तान में गये। बच्चे तो सभी आ गये। वहां तुम देखो कैसे रहे। बड़े–2 मकान थे। मोटरें थीं। कितना खर्चा होता था। तो अभी बाप कहते हैं एक बाप को याद करो और आत्माअभिमानी बनो। कितना नशा चढ़ना चाहिए भगवान हमको पढ़ा रहे हैं। बाप तुमको कितना अथाह ख़ज़ाना देते हैं। तुम धारण नहीं कर सकते हो। लेने का दम ही नहीं है। मत पर नहीं चलते हो। बाप तो कहते हैं झोली भर लो। शंकर के आगे जाकर कहते हैं झोली भर दो। अभी वहां झोली कहां से आवेंगी? यहां–2 बहुतों की झोली भरती है। बाहर जाने से ही झोली बह जाती है। धारणा नहीं होती। बाप कहते हैं मैं तुमको बहुत भारी ख़ज़ाना देता हूँ। ज्ञान सागर तुमको रत्नों की थालियाँ भर कर देते हैं। नम्बरवार जो अपनी झोली भरते हैं वह फिर दान भी करते हैं। सभी को प्यारे लगते हैं। होगा ही नहीं तो फिर देंगे क्या? है तो देंगे ज़रूर। राजधानी स्थापन होती है यह किसकी भी बुद्धि में नहीं होगा। तुम जानते हो हम अपनी राजधानी कल्प–2 स्थापन करते हैं। इस 84 के चक्र को अच्छी रीत समझना है। बाकी मेहनत है योग की। योग भी नहीं ,पढ़ाई भी नहीं तो पद भी बहुत कम मिलेगा। तुम अभी युद्ध के मैदान में हो। माया पर जीत पाने लड़ते हो। नापास हुये तो चन्द्रवंशी में चले जावेंगे। यह सभी समझने की बातें हैं ना। यह रथ तो बहुत अनुभवी हैं। इसने बहुत कुछ देखा है। गांवरे का छोरा था। लौकिक बाप को 15–20 रुपया वेतन मिलता था। पारलौकिक बाप तो देखो? यह खेल बड़ा मजे का है। गांवड़ों का भी बहुत अनुभव देखा। बहुत प्यार करते थे सभी। फिर चढ़ता गया। राजाओं, वायसराय, कमान्डर ईन चीफ आदि सभी से बात–चीत करता था। बड़ी खुशी होती थी। सभी का बहुत प्यार था। हम भी नशे से बात करता था। तुम तो गवर्मेन्ट के नौकर हो। हम तो मरचेन्ट–प्रिन्स हूँ। हमको परमिट दो। हमको कोई भी आपसे मिलने रोके नहीं। झट पर्चे दे देते थे। परमिट दिखाई और झट अन्दर चले गये। बाबा को रथ भी बहुत अनुभवी मिला है। अच्छा , मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को बापदादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। बाबा, आप हमें कितना वर्सा देते हो। उठते–बैठते सारा दिन बुद्धि में यह रहे तब ही धारणा हो सके। योग है मुख्य। योग से ही तुम विश्व को पवित्र बनाते हो। नॉलेज अनुसार तुम राज्य करते हो। वह पैसे आदि तो सभी मिट्टी में मिल जानी है। यह तो साथ चलना है। सेन्सीबुल बच्चे जो होंगे वह तो कहेंगे हम बाबा से पूरा वर्सा लेंगे। एकदम चटक पड़ेंगे। तकदीर में न है तो फिर पाई–पैसे का पद पा लेंगे। बाबा ने देखा हम 21 जन्म लिए मालिक बनते हैं विष्णुपुरी का। तो सोचा यह तो गधाई है। रावण राज्य में है ही गधाई। देहीअभिमानी बनने में मेहनत है। बाप से वर्सा ज़रूर चाहिए। पुरुषार्थ अनुसार राज–भाग लिया। फिर गंवाया। अभी फिर बाप कहते हैं मेरे मत पर चलो। माया भी नाक से ऐसा पकड़ लेती है जो पता ही नहीं पड़ता। एकदम माथा ही मूड़ लेती है। काला मुँह किया गोया माथा मूड़ लिया। डॉक्टर्स, सर्जन आदि को भी तुम समझा सकते हो। यह संजीवनी बूटी ऐसी है जो फिर कब 21 जन्म लिए बीमार नहीं पड़ेंगे ; परन्तु वह हिम्मत, युक्ति चाहिए बात करने की। एड्युकेशन मिनिस्टर की कॉनफ्रेन्स करनी चाहिए आओ तो हम तुमको बतावें इस समय मनुष्यों के कितने आसुरी कैरेक्टर्स हैं, सो दैवी कैसे बन सकते हैं हम बतावें। फूड मिनिस्टर को भी समझा सकते हो हम ऐसी राजधानी स्थापन करते हैं जहां कब अकाल नहीं पड़ेगा। इस लड़ाई के बाद एक धर्म का राज्य हो जावेगा। हम स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं। मनुष्यों को समझने में भी टाइम लगता है। अच्छा।